Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 GISRRJ | Volume 4 | Issue 2 | ISSN : 2582-0095

कोविड–19 का समाजिक प्रभाव एवं घरेलू हिंसा

डॉ0 अनीता कौल
पोस्ट डाक्टोरल फेलो, आई0सी0एस0एस0आर0, नई दिल्ली
प्रो0 घनश्याम
शोध निर्देशक, इतिहास विभाग, का0हि0वि0वि0, वाराणसी, उत्तर प्रदेश।

Article Info
Volume 4, Issue 2
Page Number : 154-160

Publication Issue :
March-April-2021

Article History
Accepted : 02 March 2021
Published : 20 March 2021

सारांश : कोविड–19 एक ऐसी अभूतपूर्व विपत्ति के रूप में मनुष्य के लिए काल बनकर आया जिसने चारों ओर कष्ट, वेदना व मृत्यु की कालिमा की तरह भयावह विपदा के रूप में प्रकट हुआ। जिसका अंत कितना भयावह रहा इसको व्यक्त कर पाना बेहद कठिन है। जहाँ इसकी प्रथम लहर ने दुनिया को हिलाकर रख दिया तो वही दूसरी लहर ने हमारी अर्थव्यवस्था के साथ मनुष्यों के स्वास्थ्य को भी झकझोर कर रख दिया। इसी के साथ तीसरी लहर ने इंसान को यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि अगर इससे बचाव के उपाय नहीं किया गया तो इसकी भयावह स्थिति चौथी–पाँचवी तथा न जाने कितनी और लहरों के रूप में हमारे समाज व देश के लोगों के जीवन को नष्ट करती रहेगी।

मुख्य शब्द : कोविड–19 महामारी, मृत्यु, अर्थव्यवस्था, लॉकडाउन, कोविशील्ड, को–वैक्सीन आदि।

जब कोविड–19 महामारी से बचाव के संदर्भ में यह सुनिश्चित करने के लिए लॉकडाउन लगाया गया कि देश व समाज के लोग, महिलायें व बच्चे अपने–अपने घरों में सुरक्षित रहेगें। परन्तु दो वक्त की रोटी के लिए गरीब समाज के लोग पलायन करने पर मजबूर हुये। क्योंकि सरकार द्वारा लोगों को घरों से बाहर निकलना बन्द करा दिया गया था। यह लाखों लोगों के लिए भीषण कठिनाईयों से भरा समय था। वह गरीब बस इतना जानते थे कि यदि उन्हें अपना वजूद बचाना है तो उन्हें शहरों से अपने गाँवों के तरफ पलायन करना ही होगा। परन्तु यह नहीं जानते थे कि वह अपनी मंजिल तक जीवित पहुँच भी पायेगें या नहीं। क्योंकि यह एक ऐसा समय था जिसमें समाज की प्रगति या विकास की स्थिति बिल्कुल ठप हो चुकी थी महिलाये बच्चे युवा बुजुर्ग सभी के लिए कोविड–19 महामारी बेहद संकटपूर्ण स्थिति को उत्पन्न कर दिया था।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

कोविड–19 के अवधि के दौरान देश व समाज के लोगों में महत्वपूर्ण बदलाव भी दृष्टिगत हुये परिवार प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने व स्वस्थ जीवन शैली अपनाने के लिए लोग विवश हुये। तथा प्राकृतिक व हर्बल उपचार को प्राथमिकता प्रदान किया जा रहा था। लोगों का एक जगह एकत्रित होना खतरनाक होने के कारण सभी आयोजन बेहद सादगी व शान्तिपूर्वक किये जा रहे थे। इस महामारी का फैलाव रोकने के उद्देश्य से जरूरी हो चुके लॉकडाउन से भारत की अर्थव्यवस्था के साथ हमारे सामाजिक जीवन पर इसकी मार ऐसी पड़ी कि लोगों को अपने जीवन के लिए आजीविका को बचाने की विकट स्थिति से जूझना पड़ा। यह मानव सभ्यता के समकालीन इतिहास की एक बड़ी घटना के रूप में दर्ज हो चुकी है जिसे भूलना मानव इतिहास के बस में नहीं है। इस कोविड–19 महामारी के साथ सबको जीने की आदत डालनी होगी तथा इससे बचने के लिए अपने स्वास्थ्य–प्रणाली को लगातार मजबूत बनाने की आवश्यकता पर बल देना होगा। कोविड–19 महामारी के दौरान डाक्टरो, सामाजिक कार्यकर्ताओं तथा स्वास्थ्य कर्मियों को समाज में व्यापक चुनौतियों का सामना करना पड़ा है। 'कोविड–19 महामारी' ने पुरी दुनिया के बड़े विचित्र तरीके से प्रभावित किया है, कही पर यह एक दूसरे को आपस में जोड़ने का कार्य किया तो कहीं अलगाव भी पैदा कर दिया है, सभी अलग–अलग जगहों पर अटक से गये। इसने हमारे समाज तथा पूरी दुनिया के सर्वांगिड विकास को कैसे प्रभावित किया है इसका प्रमाण दिन–प्रतिदिन के समाचार पत्रों, टेलीविजन इत्यादि माध्यमों से हमें प्राप्त होता रहा है। जिससे हमें इसकी भयावह स्थिति को समझने की क्षमता विकसित हो सकी है। पूरी दुनिया को हिला देने वाली कोविड–19 महामारी ने जो विश्वव्यापी प्रकोप फैलाया है उसका कहर अभी भी बना हुआ है। इस महामारी का असर मानव जीवन के अनेक क्षेत्रों पर देखा जा सकता है। जैसे सामाजिक–आर्थिक, राजनीतिक इत्यादि। इस महामारी के दौर में विभिन्न राष्ट्रो की भूमिका और भी बढ़ गयी है। इसके विभिन्न स्तरों पर राजनैतिक निर्णय लेने के ज्यादा अवसर मिले। इसमें वैक्सीन की उपलब्धता तथा वितरण के अवसर सबसे ज्यादा नजर आये। 'कोविड–19' से बचाव के सन्दर्भ में वैक्सीन के उपयोग में सहयोग की दृष्टि से भारत की 'वैक्सीन मैत्री' की पहल 'कोविड–19' के फैलाव को रोकने तथा भारतीय अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम रहा है। इस प्रकार की मानवीय प्रयास को बहुजन हिताय व बहुजन सुखाय नीति के अनुरूप किया गया है।

जिसके लिए वैज्ञानिकों का कौशल व दृष्टिकोण महत्वपूर्ण साबित हुआ। भारत का विश्व के टीकों के सबसे बड़ा निर्माता के रूप में वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। 'वैक्सीन मैत्री' से भारत के दृष्टिकोण को लोकतान्त्रिक आदर्शों, सहयोग, मानवीय तथा सांस्कृतिक मूल्यों को पुर्नरेखांकित करने का अवसर मिला है। 'कोविड–19' के समय भारत अपनी वैश्विक वैक्सीन नीति के कारण वैश्विक राजनीति में सफलता के विशिष्ट लाभ के लिए उत्तरदायी रहा है। भारत की इस क्षमता के लिए 'कनाड़ा के प्रधानमंत्री

जस्टिन ट्रूदों' ने सराहना की है। भारत का साकारात्मक, राजनैतिक मेधा, मानवीय लोकतान्त्रिक जीवन मूल्यों का परिचायक है।

कोविड–19 के प्रभाव को कम करने के लिए बनायी गयी। वैक्सीन दुनिया की सबसे सस्ती मानी गयी है। 'सीरम इंस्टट्यूट आफ इण्डिया' ने 'कोविशील्ड' को विकसित किया है तथा भारत बायोटेक द्वारा, आई0सी0एम0आर तथा राष्ट्रीय बायोलॉजी संस्थान के सहयोग (NIV) द्वारा 'को–वैक्सीन' को तैयार किया गया है। जिसके प्रभाव को देखते हुये अनेकों वैज्ञानिक प्रयोग किये जा रहे हैं। इस 'कोविशील्ड' तथा 'कोवैक्सीन' के बेजोड़ उत्पादन क्षमता को देखते हुये 'वैश्विक वैक्सीन नीति' को भारत के पक्ष में देखा जा रहा है।

भारत ने अनेक देशों को वैक्सीन उपलब्ध कराया है, जिसमें भूटान, नेपाल, मारिशस, म्यांमार, बाग्लादेश, मालदीप, मिश्र, ओमान, श्रीलंका, ब्राजील, यूएई, मोरक्को, वहरीन ओमान, कुवैत, दक्षिण अफ्रीका तथा अल्जीरिया सम्मिलित है, इसके साथ ही 56 लाख टीके अफगानिस्तान को अनुदान के रूप में दिये गये हैं। तथा एक करोड़ टीके व्यावसायिक आधार पर दिये गए है। प्रशांत महासागर, कैरिबियाई, निकारागुआ इत्यादि देशों को टीके पहुँचाये गये हैं। वैश्विक स्तर पर यह कार्य, 'वैक्सीन मैत्री नीति' के अन्तर्गत किया गया है। यह भारत की 'सागर' 'सेक्यूरिटी एंड ग्रोथ फार ऑल इन दि रीजन' (SAGAR) नीति के अनुरूप किया गया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की मंजूरी मिलने के बाद ऑक्सफोर्ड एस्ट्रा जेनेका द्वारा बनाये गये वैक्सीन को विभिन्न देशों के इस्तेमाल के लिए तैयार कर दिया गया है। 'सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इण्डिया' ने उत्पाद भागीदार के रूप में 'आक्सफोर्ड–एस्ट्रा जेनेका' के साथ समझौता किया है। (मोरदानी, 2021)

विभिन्न मानदण्डों के आधार पर जुड़ाव व सहयोग के आधार पर अपने सम्बन्धों को निभाना राजनय है। वैश्वीकरण के दौर में वैश्विक राजनय के नये–नये आयाम खुले है, कुछ वैश्विक जटिलताये तो आयी है, परन्तु इसमें अन्य देशों के प्रतिभागी भी सम्मिलित हुये है। इस वैश्विक चुनौतियों से निपटने का एकमात्र मार्ग संयुक्त वैश्विक प्रयास ही उपयुक्त रहा है। एक तरफ कुछ विकासशील देशों ने भूमण्डलीकरण का लाभ उठाते हुए तेजी से प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि दर्ज की, वहीं कई अन्य देशों में इसे लेकर एक आशंका भी हैं और वे मध्यम आय के जाल में फँसने से बचना भी चाहते हैं। अतः कोविड 19 इससे ज्यादा खराब समय पर नहीं आ सकता था।

भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा सार्क के सदस्य देशों के नेताओं से विडियों कॉन्फ्रेसिंग के द्वारा कोविड–19 वायरस से निपटने की रणनीति के तहत जी–20 देशों के साथ आपसी सहयोग की भावना का विस्तार के अनुसार यह तय हुआ कि देश इस वैश्विक महामारी को रोकने में आपसी सहयोग को बढायेगें

जिससे इस महामारी के दौरान अधिक से अधिक लोगों को बचाया जा सकेगा तथा आर्थिक स्थायित्व को भी बनाये रखा जा सकेगा और संकट से निपटने में आपसी स्तर पर मदद किया जा सकेगा। फिलहाल कोविड–19 महामारी के समय सभी मोर्चों पर चुनौतियाँ और भी गहराती जा रही है, राष्ट्रवाद के उदय से पहले से ही भूमण्डलीकरण संघर्षरत था तथा वैश्विक सुसाशन को लेकर एक बड़ा संकट सामने आ गया जिससे निपटना मुश्किल होता नजर आ रहा है। क्योंकि संकट के समय आपसी भरोसे में भारी कमी देखी जाती है।

कोविड–19 के कारण, उद्योग व रोजगार जैसे आर्थिक गतिविधियों में कमी आने के कारण रोजगार व कल्याण जैसी गतिविधियों पर जो भी दुष्प्रभाव पड़ा है, उसे कम करने के उद्देश्य से पी0डी0एस0 मनरेगा व अन्य प्रकार के पेंशन स्कीमों को मजबूत करने के साथ जिनकी नौकरियाँ खत्म की जा रही है उनके लिए आय के स्रोत का इतंजाम करने के लिए हमें अपनी सार्वजनिक वितरण प्रणाली यानी पी0डी0एस0 को और ज्यादा व्यापक करना होगा। इसके लिए वित्तीय संकट में उत्पादन व्यवस्था के अवरोधों में कमी लाकर ही आर्थिक गतिविधियों को दोबारा अपनी पटरी पर लौटाना होगा जिससे ज्यादा 'कर' संग्रह किए जा सकेगें। कोविड–19 ने सम्पूर्ण मानवजीवन के साथ ही साथ समाज व महिलाओं के प्रगति के मार्ग को अवरूद्ध तो किया है। मानव जीवन के सम्पूर्ण प्रगति का मार्ग को भी अवरूद्ध कर समूचे विश्व को संकट के तरफ ढकेल दिया है।

देश व समाज की शिक्षा व्यवस्था, मनोरंजन का माध्यम, उपभोग का स्वरूप तथा स्मार्ट उत्पादन प्रणालियों को बदल कर संकट के स्तर तक ला दिया है, जहाँ पर हमें 'सामाजिक प्राणी' होने की परिभाषा पर पुनः नये सिरे से गम्भीरतापूर्वक विचार करने पर विवश कर दिया है। संभवतः इस कोविड–19 महामारी का सबसे भयानक लक्षण इसकी अनिश्चितता रही है। इसके लक्षणों से लेकर इसकी पुनः वापसी की आशंका तक रोगियों के शरीर के महत्वपूर्ण अंगों पर इसके संभावित दीर्घकालीन नुकसानों तथा इससे उबर चुके लोगों में इसके गंभीर प्रभाव इसके संक्रमण के समाप्त होने के लम्बे अरसे बाद तक चिकित्सकीय, परीक्षणों तथा उचित देख–रेख का आत्मविश्लेषण व चिन्तन करे कि ऐसी कौन सी गलतियाँ हुयी जिसकी वजह से सम्पूर्ण मानव जाति चाहे वह स्त्री ही या पुरुष सबका जीवन पद्धति संकटपूर्ण, असंतुलित व अरक्षणीय बन गयी जिसकी भरपाई कर पाना बेहद कठिन हो गया है। कुछ अध्ययनों से ऐसे तथ्य सामने आने लगे जिसमें शराब की लत, चिंता, मादक पदार्थों का सेवन व अवसाद की समस्या सामने आयी वहीं दूसरी तरफ घर पर सुरक्षित तरह से रहने के लिए नवोन्मेषी व रचनात्मक तरीके ईजाद किये जा रहे थे। जिसके अन्तर्गत ऑनलाइन शिक्षण कार्यक्रमों का विकास हुआ जिससे कौशल विकास व आन्तरिक शान्ति की प्राप्ति किया जा सकें। कोविड–19 महामारी से जुड़ी मौतो, आर्थिक तंगी तथा बड़े पैमाने पर घरों में कैद

होने के कारण लोगों को चिंता व अवसाद का सामना करना पड़ा है। कोविड–19 महामहारी में पैदल चलकर घर पहुँचने वाले प्रवासियों की कहानी भी दिल दहला देने वाली रही। परन्तु अपने बचाव के लिए सामने आये व्यक्तियों व गैर–सरकारी संगठनों को यह अवसर भी मिला की वह भोजन व खाने के पैकटों इत्यादि सामग्रियों के उपलब्धता के माध्यम से हर सम्भव मदद को हाथ बढ़ाने आये व्यक्तियों, गैर सरकारी संगठनों और धार्मिक संस्थानों की भूमिका महत्त्वपूर्ण थी।

भूमण्डलीकरण मानव सभ्यता की वहीं पहचान है जिसके कारण टेक्नालॉजी की, शक्ति को बड़े पैमाने पर सीमाओं के आर–पार पूँजी व लोगों का आवागमन संभव हो सका है। पिछले दशक के आर्थिक वित्तीय संकट से यह स्पष्ट हुआ है कि वैश्विक पूंजी सबको जोड़कर रखने वाला तत्व नहीं हो सकता है। आपसी भरोसे में कमी के कारण पहले ही अन्तराष्ट्रीय व्यापार कमजोर पड़ चुका है। कोविड–19 महामारी के दौरान शेयर बाजार औधें मुँह गिरा। जिसे कारण आर्थिक प्रभावों के विभिन्न अध्ययनों से इस निष्कर्ष पर पहुँचा गया कि हर देश के अपने कुछ निष्कर्ष व अनुशंसाएँ है। अमेरिका यात्रा के अंकुश पर विश्व व्यापार व्यवस्था पर और भी डर का माहौल पनप गया। 'ओईसीडी की रिपोर्ट के अनुसार कोविड–19 महामारी के दौरान सकल घरेलू उत्पादन में 4.30 प्रतिशत तक की गिरावट के साथ बेरोजगारी में 7 प्रतिशत तक की बढ़ोत्तरी के आंकड़े सामने आये।

पूरी दुनिया में सकल घरेलू उत्पाद में कुल मिलाकर 2.4 प्रतिशत की कमी की उम्मीद बतायी गयी तथा दुनिया भर में लगभग 4000 उड़ानों के प्रभावित होने से सामाजिक प्रगति की व्यवस्था बहुत ही धीमी गति से चली। कोविड–19 महामारी के सन्दर्भ में आर्थिक मंदी के बारे में पहले से ही यह अनुमानित रहा कि, आर्थिक मंदी के कारण प्रत्यक्ष कर, व्यक्तिगत कर, कारपोरेट व अप्रत्यक्ष कर से जी0एस0टी0 की आय में कमी दर्ज होगी। परन्तु आर्थिक गतिविधियों को बनाए रखने के लिए ज्यादा से ज्यादा कर संग्रह के माध्यम से सामाजिक व्यय के प्रभाव को कम किया जा सकेगा। इस वैश्विक प्रभाव ने लोगों के भावात्मक स्वास्थ्य को प्रभावित किया है, जिससे मनुष्यों का जीवन तनाव से परिपूर्ण हो गया। इसने भविष्य के प्रति अज्ञात से भय को जन्म दे दिया है। जहाँ पहले भारतीय समाज में सामूहिकता देखी जाती रही है वहीं इस दौरान मनुष्यों का अकेलापन अलग रहने की प्रवृत्ति तथा घूमने–फिरने की गतिविधियों पर अंकुश लगाकर सामूहिक आयोजनों के संस्कृति पर कुठाराघात किया है। जिसके प्रभाव ने लोगों की मनः स्थिति पर गहरा प्रभाव डाला है। लोगों में वित्तीय संकट उत्पन्न होने का डर, सामान्य जीवन नहीं जी पाने की कसक तथा कोविड संकट की भयावह स्थिति से लोगों की भावनाओं में नकारात्मकता उत्पन्न हुयी है।

यही नहीं जब कोविड–19 महामहारी के समय समाज आर्थिक कठिनाईयों से गुजर रहा था ऐसे समय में घर की चारदीवारी के अन्दर महिलाओं के साथ हिंसक व अपमानजनक व्यवहार किये जा रहे थे। जहाँ

महिलायें स्वच्छन्द होकर अपने विचारधारा को प्रगति प्रदान कर रही थी। वही कोविड–19 ने महिलाओं के प्रगति को पूर्णतः बाधित कर दिया। उनके प्रति आक्रामकता में वृद्धि हुयी। एक अध्ययन से पता चला कि कोविड–19 के समय महिलाओं के उत्पीड़न में वृद्धि हुयी। कोविड–19 महामारी ने उनकी प्रगति के मार्ग को अवरूद्ध कर उन पर घरेलू हिंसा जैसी अपराध को बढ़ावा दिया है। जहाँ जीवन के संभावित खतरे के बीच वित्तीय दबाव व सामाजिकता के अवसरों के आभाव में जी रहे मनुष्यों को शराब तथा तंबाकू पे आश्रित होना पड़ा और उसके न मिल पाने की स्थिति में मनुष्य हिंसक होकर महिलाओं पर अनेकों प्रकार के शारीरिक, मनोवैज्ञानिक, यौन शोषण जैसे अपमानजनक तथा जोखिम भरे वातावरण में महिलाओं को कोविड–19 के लॉकडाउन के समय झेलने पर मजबूर होना पड़ा। विकसित देशों की भी यही हकीकत रही, घरेलू हिंसा के मामले लॉकडाउन के पाँचवे हफ्ते में पुणे पुलिस के पास दर्ज की गयी वो सामान्य दिनों के तुलना में 12 गुना तक बढ़ गयी थी। घरेलू हिंसा की बढ़ोत्तरी ने महामारी शब्द को तर्कसंगत ठहराया है। अतः कोविड–19 ने महिलाओं के प्रगति के मार्ग को अवरूद्ध कर समाज की कर्णधार कही जाने वाली महिलाओं की जो पूरे परिवार का पालन–पोषण करती है, उसका जीवन संकट के दौर से गुजरने पर मजबूर कर दिया। परिवार की मूलभूत इकाई तथा समाज का आदर्श रूप प्रस्तुत करने वाली महिलाओं के उपर इस प्रकार 'घरेलू–हिंसा' को कभी भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। इस महामारी ने हमारे सम्मुख जो उदाहरण प्रस्तुत किया है, उस पर पूरे समाज को गौर किये–जाने की आवश्यकता है तथा उस पर पुनः नये सिरे से विचार करने की आवश्यकता है।

अतः कहा जा सकता है कि कोविड–19 महामारी ने देश व समाज के आर्थिक राजनीतिकि, सामाजिक, धार्मिक इत्यादि सभी क्षेत्रों को प्रभावित करने के साथ ही साथ महिलाओं के जीवन पर घरेलू हिंसा के रूप में जो घातक प्रभाव छोड़ा है इसको केवल मनुष्यों के विचारों में सुधारात्मक परिवर्तन के द्वारा ही समाप्त किया जा सकेगा।

कोविड–19 के घातक प्रभाव को तो समाप्त होने में अभी भी बहुत धैर्य व मेहनत की आवश्यकता है परन्तु यदि महिलाओं के प्रति हर मनुष्य अपने सोच में परिवर्तन लाये तभी इसे समाप्त किया जा सकेगा। और तभी देश व समाज की प्रगति में महिलाओं की भागीदारी को सुनिश्चित किया जा सकेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. योजना जून 2021, पृ0 5
2. योजना जून 2021, पृ0 6
3. जोसेफ एस0नाई0जे0 2012, साफ्ट पावर दि मीन्स आफ सन्सेज इन वर्ल्ड पालिटिक्स, नई दिल्ली, के0डब्ल्यू0 पब्लिशर्स, प्राइवेट लिमिटेड
4. योजना, जून 2021, पृ0 20
5. आर0आई0एस0, डायरी, अप्रैल 2020, पृ0 15
6. आर0आई0एस0, डायरी, अप्रैल, 2020, पृ0 15
7. द नेक्स्ट पेंडेमिक : कोविड–19, मेंटल हेल्थपैडे ईवलिन पैरिश : द असेस्मेंट ऑफ लाइफस्टाइल चेजिंस ड्यूरिंग कोविड–19 पैंडेमिक यूजिंग अ मल्टीनेशनल स्केल (hin.gov), इफैक्ट्स आफ कोविड–19 होम कन्फाइनमेंट आन इटिंग विहेव्यर एंड फिजिकल एटींग किटी : रिजल्ट्रस आफ द इसी एलबी–कोविड–19 इंटरनेशनल आनलाइन सर्वे–पबमेड (nih.gov)
8. व्यास, एम0 (2020) : द जाब्स बल्डबाथ ऑफ अप्रैल 2020, सी0एम0आई0ई0, मुम्बई
9. बेबर थॉमस, 2020 : गांधी एंड पेंडमिक ई0पी0डब्ल्यू0 संस्करण 55, अंक सं0 25, 20 जून
10. 2020 की पहली तिमारी में घरेलू हिंसा के मामलों की संख्या में फ्रांस में 30 प्रतिशत सिंगापुर में 100 प्रतिशत अर्जेटीना में 25 प्रतिशत और साइप्रस में 33 प्रतिशत वृद्धि हुयी। चीन के हुर्वेठ प्रांत के एक पुलिस स्टेशन में फरवरी 2020 में क्वारटीन के दौरान घरेलू हिंसा की रिपोर्टस तीन गुन बढ़ गई।
11. राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो (एन0सी0आर0बी0) द्वारा प्रकाशित क्राइम इन इण्डिया रिपोर्ट 2018 के अनुसार, भारत में महिलाओं के खिलाफ हर 1.7 मिनट में एक अपराध दर्ज किया जाता है, और हर 4.4 मिनट में एक महिला घरेलू हिंसा की शिकार होती है, कोविड–19 महामारी के दौरान यह स्थिति संभवतः और खराब हुयी होगी।